Mahila college Dalmianagar
Department of History
B.A II (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date :- 23/02/2024

Topic :-

तराइन का द्वितीय युद्ध

=> तराइन की दूसरी लड़ाई 1192 में घुरिद बलों द्वारा राजपूत संघ के खिलाफ तराइन (हरियाणा, भारत में आधुनिक तरावड़ी) के पास लड़ी गई थी। लड़ाई के परिणाम-स्वरूप आक्रमण करने वाली घुरिद सेनाओं की जीत हुई। मध्यकालीन भारत के इतिहास में इस लड़ाई को व्यापक रूप से प्रमुख मोड़ के रूप में माना जाता है क्योंकि इससे उत्तर भारत में कुछ समय के लिए राजपूत शक्तियों का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ और दृढ़ता से मुस्लिम उपस्थिति स्थापित हुई, जिससे दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई।

* पृष्ठभूमि

पृथ्वीराज चौहान की सेना ने 1191 में तराइन का प्रथम युद्ध में घुरिदों को हराया था। घुरिद राजा मोहम्मद गोरी, जो युद्ध में गंभीर रूप से घायल हो गया था, गजनी लौट आया और अपनी हार का बदला लेने की तैयारी की। इतिहासकार आमतौर पर तराइन की दूसरी लड़ाई को 1192 में मानते हैं, हालांकि ऐसी संभावना है कि यह

1192 के अंत में हुआ था।

सैन्यबल संख्या :-

16वी-17वी शताब्दी के लेखक फरिश्ता के अनुसार "चौहान सेना में 3,000 हाथी, 300,000 घुड़सवार और पैदल सेना शामिल थी।" जिसे आधुनिक इतिहासकारों द्वारा एक अतिशयोक्ति माना जाता है। सतीश चंद्र के अनुसार "मुइज़ुद्दीन के सामने आने वाली चुनौती और उसकी जीत के पैमाने पर जोर देने" के लिए आंकड़ों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया था। कौशिक रॉय इसी तरह टिप्पणी करते हैं कि मुस्लिम इतिहासकारों ने नियमित रूप से मुस्लिम राजाओं का महिमामंडन करने के लिए हिंदू सैन्य ताकत को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया, और संभवतः 300,000 सैद्धांतिक संख्या थी जिसे संभावित रूप से उस समय के सभी राजपूत राज्यों द्वारा जुटाया जा सकता था।

हम्मीर महाकाव्य और पृथ्वीराज रासो जैसे भारतीय स्रोतों के अनुसार, चौहान सेना एक साथ कई मोर्चों पर लगी हुई थी और पृथ्वीराज के पास युद्ध के मैदान में उसकी सेना का केवल एक हिस्सा था। उसकी दूसरी सेना पृथ्वीराज पहुँचने वाली थी लेकिन जाम मुइज़ुद्दीन के पक्ष में पहले ही तय हो चुका था।

* लड़ाई :-

लड़ाई उसी क्षेत्र में हुई जिसमें पहले युद्ध हुआ था। यह जानते हुए कि चौहान सेना अच्छी तरह से अनुशासित

थी, घुरीद उनके साथ हाथापाई युद्ध में शामिल नहीं होना चाहते थे। इसके बजाय घुरिद सेना को पांच इकाइयों में बनाया गया था, और चार इकाइयों को दुश्मन के किनारों और पीछे पर हमला करने के लिए भेजा गया था। मोहम्मद गोरी ने एक घुड़सवार सेना का नेतृत्व किया, जिसे चार भाग में विभाजित किया गया, ताकि चार पक्षों पर चाहमान बलों को घेर लिया जा सके। उन्होंने इन सैनिकों को निर्देश दिया कि जब दुश्मन हमला करने के लिए आगे बढ़े तो युद्ध न करें और इसके बजाय चाहमना हाथियों, घोड़ों और पैदल सेना को थकाने के लिए पीछे हटें। चाहमान बलों ने भागती हुई घुरिद इकाई पर धावा किया जैसा कि घुरिदों की उम्मीद थी। इस रणनीति के कारण चाहमान सेना थक गयी, फिर घुरिदों ने 12,000 की एक नई घुड़सवार सेना भेजी और वे दुश्मन को आगे बढ़ने से रोकने में कामयाब रहे। शेष घुरीद सेना ने फिर चाहमान पर हमला किया अंततः उनकी जीत हुई।

Scanned with CamScanner